शिखर 3

पाठ 1. धूप

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता सवेरे के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कर रही है। सूरज की किरणों से निकली धूप के नित निश्चित समय आने-जाने के माध्यम से बच्चों को अपने कार्य निश्चित समय पर करने की सीख भी दी जा रही है।

पाठ का सारांश

सुबह-सुबह धूप आकर चारों तरफ़ बिखर गई है। शिखर से लेकर धरती तक धूप समान रूप से फैल गई। थकने के बाद वह डाली-डाली पर रुक-रुककर सुस्ता रही है। एक-एक गली से होती हुई धूप घर में आ घुसी है। जाड़े की धूप मन को भाती है तो गरमी की धूप तन झुलसाती है। सूरज निकलने के बाद धूप दिन भर अपना असर दिखाती है। थके हुए मुसाफ़िर की तरह शाम होने पर वह सो जाती है।

अध्यापन संकेत

कविता वाचन से पहले बच्चों से चर्चा करें कि उन्हें गर्मियों तथा सर्दियों की धूप कैसी लगती है। उन्हें बताएँ आज हम धूप की कविता पढ़ेंगे। कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों को मौन वाचन करने के लिए प्रेरित करें। बच्चों से पूछें तथा बताएँ–

- पूछें, यदि धूप न निकले तब क्या होगा! बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर दें। इससे बच्चों की अनुमान तथा कल्पना शक्ति का विकास होगा।
- क्या तुमने सूर्य उदय अथवा अस्त होते देखा है, उस समय वह कैसा दिखाई पड़ता है, बताइए।
- बताएँ कि बारिश के बाद इंद्रधनुष भी धूप के कारण ही निकलता है।
- पेड़ पौधों के लिए धूप क्यों आवश्यक होती है?
- जो बच्चे काला होने के डर से धूप में नहीं जाते उन्हें बताएँ कि सूरज की धूप में भरपूर मात्रा में विटामिन डी होता है जो हड्डियों के लिए लाभदायक होता है।
- कविता की पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें तथा कठिन शब्दों का अर्थ बताते जाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।